राम की शक्ति–पूजा : काव्य–रूप

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र

काव्य अपने प्रत्येक रूप में भावों और विचारों का सशक्त अभिव्यंजक हुआ करता है। अतः हमारे विचार में उसका आस्वादन उसे मात्र काव्य मानकर ही किया जाना चाहिए। फिर भी आकस्मिक स्तर पर उसके स्वरूप विधान का विचार करना अपेक्षित रहा करता है। इसी कारण आवश्यकता एवं बाह्यता से यहां 'राम की शक्ति–पूजा' के काव्य रूप पर विचार किया जा रहा है।

काव्य विविध भावों की मनोरम स्थली है, अतः किसी एक निश्चित आधार पर काव्यों का वर्गीकरण करना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। काव्य को वर्गीकृत करने के स्थूलतः दो आधार निर्धारित किये गये हैं – स्वरूप का आधार और रमणीयता का आधार।

'स्वरूप' से तात्पर्य काव्य के ऐन्द्रिय विषयों अर्थात् आकार शैली आदि से है। अतः इस आधार पर काव्य के दो भेद हैं – श्रव्य–काव्य और दृश्य–काव्य। जिन काव्यों का वास्तविक आनन्द उन्हें सुनने अथवा पढ़ने से मिलता है; उन्हें श्रव्य काव्य कहते हैं ओर जिन काव्यों का वास्तविक आनन्द उनका अभिनय देखने से मिलता है, उन्हें दृश्य काव्य कहते हैं। प्रतिपादन या अभिव्यंजना के माध्यम को शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के तीन भेद किये गये हैं – गद्य काव्य, पद्य काव्य और चम्पू काव्य। गद्य काव्य गद्यमयी शैली में लिखा जाता है जिसके कारण इसमें लय और संगीत का अभाव होता है। कहानी, उपन्यास आदि इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। लय, संगीत और छन्दों से युक्त या मुक्त रचना को पद्य–काव्य कहते हैं। महाकाव्य, खंडकाव्य, आदि इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। गद्यकाव्य शैली से सम्मिश्रित काव्य को चम्पूकाव्य कहते हैं।

प्रबंध की दृष्टि से पद्यकाव्य के दो भेद होते हैं – प्रबंधकाव्य और मुक्तक काव्य। प्रबंधकाव्य में किसी कथा का धारावाहिक वर्णन होता है और उसके पद्य परस्पर सम्बद्ध होते हैं। इसके विपरीत मुक्त काव्य होता है; अर्थात् मुक्तक काव्य में न तो किसी धारावाहिक कथा की योजना होती है और न उसके पद परस्पर सम्बद्ध होते हैं। विस्तार और वर्ण्य वस्तु के रूप की दृष्टि से प्रबंधकाव्य के दो भेद होते हैं – महाकाव्य में जीवन और जगत् का विस्तृत एवं समग्र वर्णन होता है। इसमें आकार की विपुलता के साथ–साथ विषय की व्यापकता भी होती है। खण्ड काव्य में पूर्ण कथा के किसी एक अंश का वर्णन होता है; अतः इसमें महाकाव्य की भांति न तो आकार की विपुलता होती है और न विषय की व्यापकता, यद्यपि अन्य सभी लक्षण उसी के समान ही रहा करते हैं।

संस्कृत और पाश्चात्य दोनों ही काव्य शास्त्रों ने महाकाव्य के स्वरूप का विस्तार से विवेचन किया गया है। डॉ0 शम्भूनाथ सिंह ने इन दोनों का समन्वय करके महाकाव्य का स्वरूप इस प्रकार निर्धारित किया है –

महाकाव्य वह छन्दोबद्ध कथानक काव्य रूप है जिसमें क्षिप्र कथा प्रवाह या अलंकृत वर्णन अथवा मनोवैज्ञानिक चित्रण से मुक्त ऐसा सुनियोजित, सांगोपांग और जीवंत लम्बा कथानक होता है तो रसात्मकता या प्रभावान्विति उत्पन्न करने में पूर्ण समर्थ होता है। जिसमें यथार्थ

कल्पना या सम्भावना पर आधारित ऐसे चरित्र या चरित्रों के महत्वपूर्ण जीवन वृत्त का पूर्ण या आंशिक चित्रण होता है जो किसी युग के सामाजिक जीवन का किसी न किसी रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं, और जिनमें किसी महत्प्रेरणा से परिचालित होकर किसी महदुददेश्य की सिद्धि के लिए किसी महत्वपूर्ण गम्भीर अथवा आश्चर्योत्पादक और रहस्यमय घटना या घटनाओं का आश्रय लेकर संश्लिष्ट और समन्वित रूप से जाति विशेष और युग विशेष के समग्र जीवन के विविध रूपों, पक्षों, मानसिक अवस्थाओं अथवा नाना रूपात्मक कार्यो का वर्णन और उद्घाटन किया गया रहता है और जिसकी शैली इतनी उदात्त और गरिमामयी होती है कि युग–युगान्तर में उस महाकाव्य को जीवित रहने की शक्ति प्रदान करता है।"

जहाँ तक राम की शक्ति–पूजा का सम्बन्ध है, उनमें ये सब विशेषताएं प्राप्त होती हैं, केवल आकार की विपुलता इसमें नहीं है। हमारे कथानक का सारांश यह है–

राम और रावण का युद्ध चल रहा है। राम ने रावण के परिवार के सभी वीरों को मार दिया है, केवल रावण बचा है। रावण की मृत्यु और जीवन पर ही राम की जीत और हार आधृत है। राम अपनी पूरी शक्ति लगाकर रावण को मारने का प्रयत्न करते हैं, पर रावण नहीं मारा जाता और राम के सारे प्रयत्न विफल हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि महामाया अगवा महा शक्ति रावण की रक्षा में लगी हुई है। राम जो भी बाण उसकी ओर चलाते हैं, महाशक्ति उन्हें बीच में ही पकड़ तोड़ देती है। इस घटना से राम के मन में अत्यन्त दुःख होता है और जीत की कोई आशा न देखकर के पूर्ण तथा निराश हो जाते हैं। जब उनके पार्षद उनके दुःख का कारण पूछते हैं तो राम उन्हें बता देते हैं कि जब तक महाशक्ति रावण की रक्षा कर रही है, तब तक उसे कोई नहीं मार सकता। साथ ही राम ने यह भी बताया कि समझ में नहीं आता कि जो रावण अधर्म के लिए लड़ रहा है, महाशक्ति उसकी क्यों रक्षा करती है। यह कहकर राम की आंखों में आंसू निकल पड़ते हैं, जिन्हें देखकर उनके सभी पार्षद दुःखी हो जाते हैं। हनुमान से अपने स्वामी का यह दुःख नहीं देखा जाता है। वे अपना रूप रौद्र बनाकर महाकाश में पहुंच जाते हैं, जहां शक्ति रहती है। उनका विचार है कि पहले महाशक्ति से ही निपट लिया जावे। शिव जब हनुमान को अपने निवास की ओर आता हुआ देखते हैं तो महाशक्ति (पार्वती) को समझाते हैं कि यदि कुशलतापूर्वक हनुमान का रोष शान्त नहीं किया गया तो यह तुम्हें हरा देगा, क्योंकि विश्व की कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है जो हनुमान की पराजित कर सके। फलतः महाशक्ति हनुमान की माता अंजना का रूप धारण करती है और हनुमान की भर्त्सना करती हुई कहती हैं कि तुम कितने नासमझ हो। जब छोटे थे तो सूर्य को निगल गये, जिसके कारण सभी सृष्टि को अत्यन्त दुःख भोगना पड़ा, और आज, शिव के पवित्र निवास पर आक्रमण करने चले हों। तुम्हें यह पता होना चाहिए कि शिव तुम्हारे आराध्य राम के भी आराध्य हैं। तुम शिव निवास पर आक्रमण करो, राम तुम्हें कभी भी ऐसा करने की अनुमति नहीं दे सकते। हनुमान पर इन बातों का प्रभाव पड़ा और वे तुरन्त लौटकर फिर राम के चरणों के पास बैठ गये।

जब राम का दुःख बढ़ता ही गया, उनके मन की खिन्नता और निराशा पनपती ही गई तो जाम्बवान ने प्रस्ताव रखा कि जिस प्रकार रावण ने महाशक्ति को वश में किया हुआ है, उसी प्रकार राम भी उसकी नवीन ढंग से नव्य शक्ति की पूजा करके उसे अपने वश में कर ले। सभी इस प्रस्ताव से सहमत हुए। राम की शक्ति की पूजा करने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने देवीदह से 108 कमल पुष्प मंगाये और एक समीपस्थ पर्वत पर निश्चित होकर महाशक्ति की पूजा में लग गये। राम की अटल और निश्चल

पूजा को देखकर सारा ब्रह्माण्ड कांप उठा, देवतागण आश्चर्य चकित रह गये। राम की पूजा निरन्तर पूर्णता की ओर बढ़ रही थी। जब एक पुष्प शेष रह गया तो महाशक्ति धारे से आकर उस पुष्प को चुराकर ले गई। राम ने आंखें बन्द किये हुए ही जब पुष्प की ओर हाथ बढ़ाया तो वहां पुष्प न देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ। उनके साथ समस्या यह थी कि बिना पुष्प चढ़ाये उनकी सारी साधना अधूरी और निष्फल थी। वे अन्य पुष्प लेने के लिए अपने आसन से उठ भी नहीं सकते थे, क्योंकि इससे उनका तप–भंग होता था। वे बड़े असमंजस में पड़े। एक बार पुनः उनके मन में खिन्नता और निराशा के भाव आ गये। जैसे वे अब रावण को युद्ध में पराजित करके सीता को उसके कारागार से मुक्त न कर सकेंगे। परन्तु कुछ देर बाद उनका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उन्हें ध्यान आया कि उनकी माता उन्हें राजीव नयन कहा करती थी। नेत्रों के रूप में अभी भी उनके पास दो कमल–पुष्प शेष हैं। यह सोचकर राम ने अपना तीर उठाया और अपनी अपनी आंख को निकालने के लिये तैयार हुए। तभी महाशक्ति प्रकट हुई। उन्हें राम को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा तप पूरा हो गया है, और अब युद्ध में तुम्हारी विजय अवश्य होगी।

इस कथानक में कथा का क्षिप्र प्रवाह भी है, अलंकृत वर्णन और मनोवैज्ञानिक चित्रण भी है, सुनियोजित कथा भी है और रसात्मकता तथा प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति भी है। परन्तु किसी महाकाव्य के लिए जिस व्यापक कथानक की आवश्यकता होती है, उसका इसमें अभाव है। अतः केवल इतना सा कथानक महाकाव्य के उपयुक्त नहीं हो सकता और न इस कथानक पर लिखी किसी लम्बी कविता को महाकाव्य कहा जा सकता है।

महाकाव्य के चरित्र उदात्त होने चाहिए। विशेषतः नायक तो ऐसा हो जो अत्यन्त बल–सम्पन्न एवं प्रभावशाली हो। उसमें सभी उदात्त गुणों का समावेश हो। नायक के महत्व का प्रतिपादन संस्कृत–काव्य शास्त्र में विस्तार से विचार किया गया है। आचार्य विश्वनाथ ने नायक के अनिवार्य गुणों का उल्लेख करते हुए कहा है कि वह किसी राजवंश से सम्बद्ध होना चाहिए। उसमें धीरोदात्त नायक के गुण होने चाहिए। वह ख्याति–प्राप्त भी होना चाहिए। इसमें संदेश नहीं कि प्रस्तुत कविता का नायक राम इन सभी गुणों से मंडित है। कविता के अन्य पात्र जाम्बवान, विभीषण, हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि भी उदात्त गुणों से युक्त है। कहने का भाव यह है कि महाकाव्य के पात्रों में जिन गुणों की अपेक्षा होती है, वे प्रस्तुत कविता के पात्रों में विद्यमान है। पर यहां पर भी अवरोध व्यापकता का है। महाकाव्य में पात्रों के चरित्र–चित्रण में जिस व्यापकता का आधान जाता है, वह पात्रों में नहीं है। इस कविता में इन पात्रों के चरित्रों की कुछेक झांकियां ही दृष्टिगोचर होती है, सम्पूर्ण चरित्र नही। कवि ने नायक राम को अवतार एवं ब्रह्मस्वरूप एवं तो प्रतिपादित किया है, पर उनमें मानवीय गुणो – अर्थात् मानवीय सुख–दुःखात्मक अनुभूतियों का ही सरल विकास दिखाया है, जो कि काव्य–शास्त्रीय नायकों की कसौटी पर खरा नहीं कहा जा सकता है। अतः चरित्र चित्रण की दृष्टि से भी प्रस्तुत कविता महाकाव्य के अन्तर्गत नहीं आ सकती।

जहां तक प्रेरणा, उद्देश्य और शैली का सम्बन्ध है, महाकाव्य में किसी महाप्रेरणा, महत् उद्देश्य और महान शैली का होना आवश्यक माना गया है। प्रस्तुत कविता प्रेरणा और उद्देश्य की दृष्टि से महाकाव्यीय क्षेत्र में आती है, पर चूँकि महाकाव्य में व्यापकता होती है, अतः उसकी शैली में वैविध्य होगा स्वाभाविक है। प्रस्तुत कविता में विस्तार का अभाव है, अतः शैली का वैविध्य यहाँ पर परिलक्षित होता है। केवल उदात्त उद्देश्य एवं शाश्वत सन्देश के आधार पर

उपरोक्त अभावों की स्थिति में उसे महाकाव्य नहीं कहा जा सकता।

इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आत्मा में महाकाव्यीय गुणों को समेटे हुए भी 'राम' की शक्ति–पूजा' महाकाव्य नहीं मानी जा सकती, क्योंकि किसी महाकाव्य के लिए जिस व्यापकता और वैविध्य की अपेक्षा होती है, उसका इस कविता में नितान्त अभाव है।

जहाँ तक तक खंड काव्य का सम्बन्ध है, इसकी आत्मा भी इन गुणों से विभूषित होना चाहिए जो किसी महाकाव्य की आत्मा के लिए अपेक्षित है, अर्थात् इसमें भी उदात्त कथानक, उदात्त चरित्र, महत्प्रेरणा और महत् उद्देश्य तथा महान शैली का विद्यमान होना आवश्यक है। पर आकार की दृष्टि से यह महाकाव्य से छोटा होता है, अतः इसमें उस व्यापकता और वैवध्य की संयोजना नही हो सकती, जो महाकाव्य में की जाती है। डा0 बृजेश्वर वर्मा ने खण्ड काव्य के स्वरूप का प्रतिपादन इन शब्दों में किया है –

'मोटे ढंग से कहा जा सकता है कि खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध काव्य है जिसके कारण कथानक में इस प्रकार की एकात्मक अन्विति ही कि उसमें अप्रासंगिक कथाएं सामान्यतया अन्तर्युक्त न हो सके, कथा में एकांगिता – साहित्यदर्पण के शब्दों में एकदेशीयता हो, तथा–विन्यास में कम–आरम्भ, विकास, चरम सीमा और निश्चित उद्देश्य में परिणति हो। कथा की एकापिता के परिणामस्वरूप खण्डकाव्य के आकार में लघुता स्वाभाविक है और साथ ही उद्देश्य की महाकाव्य जैसी महनीयता सम्भव नहीं है। कथा की एकांगिता के फलस्वरूप खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य चाहे कोई चरित्र, घटना प्रसंग, परिस्थिति विशेष या कोई सामयिक अथवा जीवन–दर्शन सम्बन्धी सत्य हो, कवि अपने व्यक्तित्व का उसके साथ अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठतापूर्वक तादात्म कर लेता है। अतः खंड काव्य के कवि का दृष्टिकोण उतना व्यक्ति–निरपेक्ष और वस्तुपरक नहीं रहता जितना महाकाव्य के लिए अपेक्षित है। कथा–विन्यास में नाटकीयता खंडकाव्य के आकर्षण को बढ़ा देती है। खंड काव्य में वर्णन विस्तार नहीं हो सकता। उसकी वस्तु भावात्मक अधिक होती है, अतः गातकाव्य की भाव–प्रवणता और तीन अनुभूति उनमें जितनी अधिक होती है। उसका प्रभाव भी उतना ही अधिक होता है। इस प्रकार उसकी कथा का विकास बहुत कुछ भाव–विकास पर आधारित होता है। खण्डकाव्य का यही लक्षण उसे चरित्र–काव्य या साधारण प्रबंधकाव्य से भिन्न करता है। खंडकाव्य का कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक, कल्पित, प्रतीकात्मक – किसी भी प्रकार का हो सकता है ब्रह्मरूप रचना सम्बन्धी सर्गबद्धता का नियम जिस प्रकार महाकाव्य की रचना में कठोरता के साथ पालन नहीं किया गया है, उसकी वस्तु भिन्न–भिन्न सर्गों में अनिवार्य रूप से विभाजित होनी चाहिए, सर्गो की संख्या निर्धारित करना और भी अप्रासंगिक है। साधारणतया खंडकाव्य में छन्दो की विविधता नहीं होती, प्रायः सम्पूर्ण काव्य एक ही छन्द में रचा जाता है।"

इस उद्धरण के अनुसार खंडकाव्य के निम्नलिखित अनिवार्य तत्व हैं –

1. कथानक में व्यक्ति–निरपेक्षता तथा वस्तु–परकता की अपेक्षा भाषात्मकता अधिक होती है।
2. कथानक की कथा एकदेशीय होती है।
3. इसके कथानक में भावात्मकता के कारण मोतितत्व आ जाना स्वाभाविक है।
4. छन्दों में वैविध्य नहीं होता।

यदि हम इन लक्षणों के आधार पर 'राम की शक्ति–पूजा' की समीक्षा करें तो यह कविता खंडकाव्य के ही अधिक निकट है। पर इसमें उतना भी विस्तार नहीं है, जितना किसी खंडकाव्य के लिए अपेक्षित है : अतः इसे

असंन्दिग्ध रूप से खण्डकाव्य भी नहीं माना जा सकता।

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि 'राम की शक्ति–पूजा' न तो महाकाव्य है और न ही खण्ड काव्य है। फिर भी इतनी बात स्पष्ट है कि इसमें प्रबन्धात्मक योजना अवश्य है। इस सम्बन्ध में अन्य विद्वानों के विचार जान लेना भी बहुत आवश्यक है। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी 'राम की शक्ति–पूजा' का महाकाव्योचित औदात्य निराला के अन्तरंग की उपज नीं है। एक तरह से वह अपेक्षाकृत अधिक पाण्डित्य और परिश्रम का परिणाम है। स्पष्ट है कि आचार्य बाजपेयी 'राम की शक्ति–पूजा' को एक प्रेरणा के भार से दबकर, स्वतः प्रस्फुटित होने वाली महाकाव्योचित सर्जना नहीं है, बल्कि एक प्रयत्नसाध्य कृति है। अपने विचारों को और अधिक विस्तार से व्यक्त करते हुए आचार्य बाजपेयी कहते हैं कि इस काव्य में महाकाव्योपयोगी सामग्री नहीं है। कवि का मात्र भाषा के सम्बल का बल ही प्राप्त है। इसका मूल कथानक और कथा ही महाकाव्योचित नहीं है। महाकाव्यों के कथा और कथानक में जिस प्रकार का औदात्य होना चाहिए, उसकी सफलता इस काव्य में कहीं भी दिखाई नहीं देती है। काव्य के कथानक में जिस प्रकार के दृश्यों की योजना की गई है वे उतने कथानक में जुड़े हुए एवं नाटकीय नहीं है जितने कि कवि अपने मानसिक संघर्ष के परिणाम। इसमें महावीर हनुमान के आकाश मन्थन का जो दृश्यांकन किया गया है, वह परा–प्राकृतिक एवं अलौकिक चमत्कार पूर्ण अधिक है। ऐसे दृश्यों और प्रसंगों की योजना गाथा काव्यों के विरही अधिक उपयोगी हुआ करती है। ऐसी परिस्थितियों में इस काव्य को महाकाव्य या महाकाव्योचित काव्य की संज्ञा देना उचित नहीं। ऊपर के विवेचन में हमने जो निष्कर्ष निकाला है, वह भी तो आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी के निष्कर्ष के सर्वथा अनुकूल है।

यद्यपि 'राम की शक्ति–पूजा' में राम के जीवन की एक ही घटना का वर्णन हुआ है, पर यह घटना उतनी घटना की कोटि में नहीं आती, जितनी कि वह मनोविश्लेषण की कोटि में आती है, फिर विद्वान यह भी स्वीकारते हैं कि इसमें एक घटना के भी समस्त परिपाश्वों का समय चित्रण नहीं हो पाया, बल्कि मनोविश्लेषण की दृष्टियों से उसके एक पक्ष मात्र का ही रूपायन हुआ है। जब समूचे खण्ड का भी चित्रण समयतः इसमें नहीं हो पाया तो फिर इसे खण्ड काव्य की कोटि में भी कैसे रखा जा सकता है? ऐसी स्थिति में यह प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहता है कि 'राम की शक्ति पूजा' का काव्य रूप क्या है?

प्रश्न का उत्तर सहज प्रतीत नहीं होता। उसके काव्य रूप के बारे में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद पाया जाता है। इस काव्य में, इतना तो निश्चित है कि अन्तः संघर्ष की प्रधानता है। राम के व्यक्तित्व को अन्तः संघर्षो की कसौटी पर अनवरत कराकर के ही महामानवीय रूप में उघाड़ा एवं उभारा गया है। फिर यह अपने आकार प्रकार में महाकाव्य तो क्या खण्ड काव्यों की तुलना में भी क्षीण एवं स्वरूप है। इन्हीं सब बातों एवं तथ्यों को निहार कर विश्वम्भर उपाध्याय ने इसे 'अन्तर्मुखी निबन्ध काव्य कहना अधिक संगत माना है। पर ऐसा कह देने से भी वास्तव में कोई बात बनती दिखायी नहीं देती, क्योंकि अन्तर्मुख निबन्धता वाली बात तो न्यूनाधिक रूप से प्रायः प्रत्येक काव्य में रहा ही करती है। विचार प्रधान कविताओं और भाव प्रधान गतियों तक में, दोहे जैसे मुक्तक में भी इस प्रकार की योजना खोजी जा सकती है। फिर जिन काव्यों में समग्र या खण्ड–कथा रहा करती है, उनमें अन्तर्मुखी निबन्धता का समावेश हो जाना नितान्त स्वाभाविक है। अतः इसे कोई नया या पुराना काव्य रूप मानकर निराला की 'राम की शक्ति पूजा' को इस या इस प्रकार की किसी श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता।

दूसरी ओर आचार्य प्रवर नन्द दुलारे बाजपेयी एवं डॉ0 नगेन्द्र निराला जी की इस रचना को 'वीरगति की भूमिका पर रची गई आख्यान रचना' कहना अधिक उपयुक्त स्वीकार करते हैं। इन दृष्टियों से 'राम की शक्ति पूजा' का काव्य पूजा 'कथानक और गीत' या 'आख्यान प्रगीत' (अंग्रेजी में बैलेड ठंससमक) के अधिक निकट ठहरता हुआ प्रतीत होता है। पर झंझट यहाँ भी वही है। एक तो यह कि अंग्रेजी के बैलेड के सभी गुण भी इस काव्य में नहीं आ पाये, दूसरी ओर महाकाव्योचित औदात्य का भी एक सीमा तक इसमें समावेश हो गया है, अतः एक बार फिर से अनिर्णय की स्थिति में उलझकर रह जाना पड़ता है।

भारतीय और पाश्चात्य काव्य परम्पराओं में इतिहास पुराण आदि पर आधारित लोक काव्यों की एक प्रभावी एवं मार्मिक परम्परा उपलब्ध होती है। उसे लोक से प्रचलित शब्दों में 'लोक गाथा' कहा जाता है। इसमें पद्योबद्ध कथानक की योजना रहती है। युद्ध, वीरता, प्रेम, पराक्रम आदि विषयों का मुख्य रूप से वर्णन किया जाता है। प्रेम के साथ–साथ उनके विरोधी घृणा, तिरस्कार आदि के अन्तःभाव भी आन्तरिक रूप में अनुयोजित रहा करते हैं। उसकी अभिव्यंजना शैली में सरलता, सरसता, स्पष्टता, स्वच्छन्दोवेग एवं प्रवाह रहा करता है। उसका पठन, श्रवण का पाठक या श्रोतागण सहज स्फूर्ति का आनन्द उठाते हैं। उसमें लोक तत्वों की भी प्रधानता रहा करती है और इसी कारण उनकी भाषा भी बोलियों या लोक भाषाओं के एकदम समीप रहा करती है। लौकिक अलौकिक सभी प्रकार की घटनाओं, मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों का समावेश इन गाथा काव्यों में स्वाभाविक रूप से रहा करता है। मूलतः लोक से सम्बद्ध होने के कारण ऐसे गाथा या गाथात्मक काव्यों में मनोवैज्ञानिकता एवं मनोविश्लेषणादि प्रायः नहीं ही आ पाते। सहज मनोविज्ञान तो हो सकता है और सामान्यतः होता भी है, पर सिद्धान्तों का प्रतिपादन, या सिद्धान्तानुरूप चित्रण तो कतई नहीं हुआ करता। पर यहाँ यह बात विशेष ज्ञातव्य है कि आज के किसी भी काव्य रूप में पूर्व–निर्धारित काव्य–शास्त्रीय नियमों का (लोक एवं ललित साहित्य, दोनों क्षेत्रों में) सर्वथा पालन नहीं किया जाता। कहीं–कहीं तो अंशतः पालन की भी उपेक्षा कर दी जाती है। इस प्रकार की उपेक्षा हमें मैथिलीशरण जैसे परम्परावादी के काव्यों में भी मिलती है। फिर भी निराला कवि तो स्वभावतः स्वतन्त्र चेत्ता, स्वच्छन्दता के पोषक एवं समस्त काव्य रूढ़ियों की सर्वथा उपेक्षा करने वाले औघड़ जीव थे। अतः उनसे यह आशा कैसे की जा सकती थी कि वे 'राम की शक्ति पूजा' या किसी अन्य काव्य की सर्जना परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों में बनाकर ही करते। निश्चय ही उन्होंने जान–बूझकर उन लक्षणों एवं परम्पराओं की अपेक्षा करके ही प्रस्तुत काव्य 'राम की शक्ति पूजा' का सृजन किया है। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर ही इसके काव्य रूप का निर्णय किया जा सकता है। अन्य कोई उपाय एवं चारा नहीं है।

'राम की शक्ति पूजा' की सृजन की प्रक्रिया में कवि ने राम जीवन के व्यापक आयाम में से मात्र एक प्रसंग को ही चुनकर उसको तथ्य एवं मौलिक रूप से उद्भावना की है कि जो आधुनिक ज्ञान और मनोविज्ञान की कसौटी पर भी खरा उतरता है। इसी कारण इस तथ्योद्भावना में बाह्य एकताा या व्यापकता चाहे न भी खोजी जा सके, पर उनमें सर्वाश्रतः आन्तरिकता एवं व्यापकता तो अन्तःयोजित है ही सही। इसमें युद्ध, प्रेम, वीरता, पराक्रम, अश्रु, ह्रास, विक्षोभ, प्रणय, स्मृतियाँ, विविध–मनोवैज्ञानिक भाव, प्रभाव, करुणा, वृत्तान्त आदि सभी की अन्तःयोजना प्रभावी ढंग से हुई है। वर्णन एवं उद्भावना में आवेग की स्वछन्दता एवं प्रवाह की अद्वितीयता विशेष रूप से दर्शनीय है। हाँ, उतना फैलाव नहीं है और इसे हम कवि की अभिव्यक्ति निपुणता ही कहेंगे। इस सम्बन्ध में डॉ0 राम विलास शर्मा ने ठीक ही

लिखा है कि – 'निराला काव्य में प्रवाह है, लेकिन फैलाव नहीं है।"

'राम की शक्ति–पूजा' में जिस बन्धन विहीन छन्द की योजना की गई है, वह उसके फैलावहीनता के गुण के सर्वथा अनुकूल है। अपनी विलम्बित गतिशीलता के कारण वह वस्तु योजना को पूर्ण ओजस्विता के साथ अभिव्यक्त एवं रूपायित करता है, सहज विकास की गति एवं दिशा प्रदान करता है। पाठरूपता के साथ–साथ सामान्य गेयता का तत्व भी उसमें विद्यमान है। कथावस्तु में हनुमान द्वारा आकाश मन्थन एवं शक्ति आराधना के अवसर पर राम द्वारा एक सौ आठ पुष्पार्पण की जो योजना की गई है, वह लोक विश्वासों के अनुरूप तो है ही नहीं, उसमें काव्य ने परा–प्राकृतिक एवं अलौकिक तत्वों का भी औचित्यपूर्ण समावेश हो गया है। इन दृष्टियों से हम 'राम की शक्ति–पूजा' का काव्य रूप गाथा आख्या गीता आदि स्वीकार कर सकते हैं। हाँ, यह रूप स्वीकार करते समय इतना याद रखना आवश्यक है कि 'राम की शक्ति–पूजा' की भाषा शैली परम्परागत रूप से 'आख्यान गीत' आदि नामों से अभिहित कर सकते हैं।

इस विवेचन के आधार पर यह कहना अधिक संगत प्रतीत होता है कि निराला ने इस काव्य को किसी एक परम्परागत काव्य रूप के श्रेणी में व्यक्तित्व प्रदान कर देना उचित प्रतीत नहीं होता। उन्हें इनके काव्य–शैलियों का पौष्टिक घोल का मिश्रण कहना अधिक संगत प्रतीत होता है। कवि ने अपनी कथा और कथानक को सामान्य 'गाथा' या 'आख्यान गीत' के धरातल से उच्च उठाकर इसे उदात्त परिपार्श्व एवं आयाम देने का सफल प्रयास किया है। इसे मूलतः महाकाव्योक्त भूमि पर ही प्रतिष्ठापित करने का सतत् प्रयास किया लगता है। फिर महाकाव्योचित गाम्भीर्य इसमें अपने समूचे आयोगों के साथ रूपायित हुआ ही है, इस बात से इन्कार करना दिन को रात करने के समान ही धृष्टता मात्र है, अन्य कुछ नहीं। प्रलम्ब प्रगीत के समान भावों एवं मनोस्थितियों के चित्रण में कवि का आग्रह तो प्रतीत होता है, पर वह अस्वाभाविक नहीं है। फिर जहाँ तक कथा, कथानक, भाव, भाव, विचार, मनःस्थितयों के मनोविश्लेषणात्मक चित्रों की अन्विति का प्रश्न है, वह बाह्य न होकर आन्तरिक ही अधिक है। आवेगों की प्रधानता के कारण ही आन्तरिक अन्वितिका स्वतः प्रश्रय मिल गया, प्रतीत होता है। अभिव्यंजना शैली में गीति–काव्य का वैयक्तिक तत्व अपने समय वैभव के साथ व्यक्त एवं रूपायित हुआ है। लोक विश्वासों की प्रचुरता तो है ही, अतिरंजना भी कम नहीं। अलौकिक या परा प्राकृतिक घटनाओं का विधान लोक विश्वासों के अनुरूप होने के कारण 'आख्यानगीत' या 'गाथा' के तत्व इसमें निश्चय ही अधिक आ गये हैं।

दूसरी ओर काव्य में अलंकृत शैली की भव्यता भी दर्शनीय है। असाधारण गम्भीरता और भावों का औदात्य अनुभव का सहज सन्तुलन एवं स्वल्प परिवेश में समीकृत चित्रण महाकाव्योचित तो है ही, कवि की प्रबन्ध पटुता का भी परिचायक है। फिर जहां तक काव्य के मूल सम्बन्ध का प्रश्न है, वह गीति काव्य के अधिक सन्निकट है। इसी कारण अनेक विद्वान विवेचक 'राम की शक्ति–पूजा' में गाथा, गीति और महाकाव्यत्मकता का सम्मिश्रण स्वीकारते है, इन सबके सन्दर्भ में हम इसे 'प्रगीतात्मक गाथा' काव्य कहना ही अधिक उचित मानते हैं। इसके अतिरिक्त कोई और काव्य रूप स्वीकार करना हमारे विचार में मात्र आग्रह ही होगा।

संदर्भ

1. छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन – कृष्ण विमल, पृ. 135
2. निरालाः कृति से साक्षात्कार–नंदकिशोर नवल, पृ. 41

3. कवि निराला–नंद दुलारे बाजपेई, पृ. 72
4. महाप्राण निराला – गंगा प्रसाद पाण्डेय, पृ. 89
5. निराला और पन्त काव्य के आध्यात्मिक प्रेरणा–श्रोत–चन्दा देवी, पृ. 143
6. निरालाः आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 141
7. निराला काव्य की छवियां – नंदकिशोर नवल, पृ. 21
8. हिंदी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 02
9. निराला और मुक्ति बोधः चार लम्बी कविताएं–नंदकिशोर नवल, पृ. 119
10. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह, पृ. 137
11. प्रगतिवादी हिंदी साहित्य का इतिहास – कर्ण सिंह चौहान, पृ. 59
12. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, पृ. 14
13. निराला और उनकी राम की शक्तिपूजा–प्रो. देशराज सिंह भाटी, पृ. 49
14. राम की शक्तिपूजा का एक आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ. रेखा वर्मा, पृ. 162
15. निराला की साहित्य साधनाः भाग 1, भाग 2, भाग 3, पृ. 41, 58, 113

Copyright © 2015 Dr R.P Verma. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.